छठवाँ अंतरराष्ट्रीय रामायण अधिवेशन

Jaipur, India

21-23 March 2024

Online Mode

30-31 March 2024

THEME

Ramayana & Modern Management

सत्य को उजागर करना:

रामचरित मानस में उद्धरित पाताल लोक की खोज

डा.भरत राज सिंह, धर्मेंद्र सिंह एवं हेमन्त कुमार सिंह,

महानिदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ एवं

अध्यक्ष, वैदिक विज्ञान केन्द्र, लखनऊ-226501

SMS LUCKNOW

विषय वस्तु

- पाताल लोक – सारांश
- 1.0 विषय परिचय
- 2.0 साहित्य समीक्षा
- 3.0 अध्यन की कार्य प्रणाली
  - 3.1-पाठ्य विश्लेषण
  - 3.2-ऐतिहासिक अनुसंधान
  - 3.3-वैज्ञानिक जांच
  - 3.4-एकीकरण और संश्लेषण
- 4.0 परिणाम चर्चा
- 5.0 निष्कर्ष

सारांश

- रामायण में उल्लखित पाताल लोक के अस्तित्व का सदियों पुराना प्रश्न, विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिये एक अबूझ पहेली के तरह परेशान करता रहा है।
- यह शोधपत्र पृथ्वी के नीचे के अस्तित्व की संभावना का पता लगाता है, जो विशेष रूप से होंडुरास के एक प्राचीन शहर स्यूदाद ब्लैंका की हालिया खोज पर ध्यान आकृष्ट करता है।
- रामायण की कथा - भगवान राम के भक्त पवनपुत्र हनुमान की यात्रा का वर्णन करती है, जो अपने प्रिय देवता को अहिरावण के चंगुल से बचाने के लिए पाताल लोक की खोजकर वहां पहुँचे थे।
- रामायण की इस गाथा के अनुसार, हनुमान ने उक्त भूमिगत क्षेत्र तक पहुंचने के लिए सात-तलो उदाहरणार्थ: पुराण के उल्लेख के अनुसार अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पातालसे होकर 70 हजार योजन की दूरी तय की थी।

SMS LUCKNOW

आगे..... सारांश

❑ उल्लेखनीय है कि, यदि आज भारत में एक सुरंग खोदी जाती है, तो यह महाद्वीपों से होते हुए मैक्सिको, ब्राजील और होंडुरास जैसे देशों मैं पहुंच सकती है और यदि यह मध्य प्रदेश के जंगल से खोदी जाय तो मध्य अमेरिका के होंडुरास में पहुँच सकती है।

❑यध्यपि पाताल लोक की अवधारणा, मानव पहुंच से परे जमीन के नीचे की दुनिया, पौराणिक कथाओं में बार-बार आती हैं, और इसके अस्तित्व पर सवाल उठाती है।

❑स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक और वैदिक विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष, प्रो. भरत राज सिंह, ने पाताल लोक की सुरंग की दूरी 1000 जोजन बंगाली रामायण से खोजी जो लगभग 12,800 कि.मी. हैऔर यह पृथ्वी के व्यास से मेल खाती है।

❑इस प्रकार, यदि कोई सुरंग की सम्भावना भारत से लेकर श्रीलंका के किसी स्थान वनायी जाती है या पाताल लोक से जोड़ती है, तो यह प्राचीन मापों के साथ सटीक रूप से संरेखित होगी।

आगे.....सारांश

- इसके अतिरिक्त, किंवदंती से पता चलता है कि अहिरावण पर विजय पाने के बाद, भगवान राम ने मकरध्वज को पातालपुरी का शासक नियुक्त किया, जो इस भूमिगत शहर में मकरध्वज की खोजी गई मूर्ति से भी जुड़ा हुआ ही प्रतीत होता है।
- यह अन्वेषण न केवल पौराणिक आख्यानों और पुरातात्विक खोजों के बीच संभावित संबंधों का खुलासा करता है बल्कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन सभ्यता और वैज्ञानिक उन्नति में योगदान को भी रेखांकित करता है।
- इससे वैश्विक स्तर पर प्राचीन ज्ञान के प्रसार को प्रोत्साहित करते हुए, मिथक और वास्तविकता के संलयन के लिए गहरी सम्भावना प्रदर्शित करता है।

चित्र-1 सियुदाद ब्लांका

1.0 पाताल लोक - विषय परिचय

प्राचीन मिथकों और किंवदंतियों की खोज अक्सर लोककथाओं और वास्तविकता के बीच जटिल अंतरसंबंध को समझने के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करती है। पौराणिक आख्यानों की विशाल टेपेस्ट्री के भीतर, कुछ कहानियाँ रामायण की महाकाव्य गाथा जितनी गहराई से गूंजती हैं । इस कालजयी कहानी के केंद्र में भगवान राम के समर्पित शिष्य हनुमान की पाताल लोक की गहराइयों में की गई साहसिक यात्रा है । जैसे ही हनुमान अपने प्रिय देवता को बचाने के लिए इस खतरनाक खोज पर निकलते हैं, कथा न केवल कल्पना को लुभाती है बल्कि पृथ्वी की सतह के नीचे छिपे रहस्यमय स्थानों के अस्तित्व के बारे में गहन प्रश्न भी उठाती है।

प्राचीन हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित, पाताल लोक को एक भूमिगत दुनिया के रूप में दर्शाया गया है जिसमें दिव्य प्राणियों, राक्षसों और पौराणिक प्राणियों का निवास है। रामायण और अन्य पवित्र ग्रंथों में पाताल लोक के वर्णन से विशाल भूमिगत साम्राज्यों, भूलभुलैया सुरंगों और रहस्य में डूबे रहस्यमय परिदृश्यों की ज्वलंत कल्पना उत्पन्न होती है।

LUCKNOW

चित्र-2: थ्योडोमोर 1935- 40

....1.0 पाताल लोक - विषय परिचय

विद्वान इन प्राचीन कथाओं के पीछे की सच्चाई को जानने की कोशिश कर रहे हैं। समझ की इस खोज ने पौराणिक कथाओं और लोककथाओं के अध्ययन से लेकर पुरातत्व और तकनीकी नवाचार तक विविध विषयों के एकीकरण को जन्म दिया है। यह इस अंतः विषय ढांचे के भीतर है कि हम पाताल लोक के पीछे की सच्चाई को उजागर करने के लिए अपनी यात्रा शुरू करते हैं। हमारी जांच के केंद्र में रामचरित मानस की कथा है, जो हिंदू साहित्य का एक मौलिक पाठ है जो काव्यात्मक रूप में रामायण की कहानी को दोबारा बताता है।

इस प्रयास का केंद्र मध्य अमेरिका के होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की खोज है, एक ऐसी जगह जिसने पाताल लोक के पौराणिक क्षेत्र से अपने संभावित संबंध के लिए ध्यान आकर्षित किया है। LiDAR तकनीक जैसी आधुनिक पुरातात्विक तकनीकों के अनुप्रयोग के माध्यम से, शोधकर्ताओं ने होंडुरास के घने जंगलों के नीचे छिपी प्राचीन बस्तियों के साक्ष्य को उजागर किया है।

SMS LUCKNOW

In the Lost City of Ancient America's Monkey God

Explorer Theodore Morde Finds in Honduras Jungles a Vanished Civilization's Prehistoric Metropolis Where Sacrifices Were Made to the Gigantic Idol of an Ape—and Describes the Weird "Dance of the Dead Monkeys" Still Practiced by Natives in Whom Runs the Olden Blood

चित्र-2: एक विशाल बन्दर की मूर्ति

2.0 पाताल लोक - साहित्य की समीक्षा

❑पाताल लोक राम के भक्त पवनपुत्र हनुमान जी अपने प्रिय देवता को अहिरावण के चंगुल से बचाने के लिए पाताल लोक में गए थे।

❑ इस गाथा के अनुसार, हनुमान ने इस भूमिगत क्षेत्र तक पहुंचने के लिए पुराण में उल्लिखित सात-तलों (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) में जाकर 70 हजार जोजन की दूरी तय की थी।

❑यदि आज भारत और श्री लंका के बीच से कोई सुरंग खोदने की परिकल्पना की जाती है, तो यह मैक्सिको, ब्राजील और होंडुरास जैसे देशों में ही निकलेगी ।

❑ पाताललोक की अवधारणा, मानव पहुंच से परे जमीन के निचली की दुनिया (अर्थात 180 डिग्री नीचे), पौराणिक कथाओं में बार-बार आती है, जो इसके अस्तित्व पर सवाल उठाती है।

❑यह भी कि लंकापति रावण के अतिरिक्त दो- अधर्मी रावण के सौतेला भाई अहिरावण व महिरावण पाताल लोक में रहते थे |

2.0 पाताल लोक - साहित्य की समीक्षा

- श्रीराम से जब लंकापति रावण का पक्ष कमजोर पड़ने लगा तो युद्ध क्षेत्र में अहिरावण आया और सोते हुए राम-लक्षमण जी को पाताल लोक उठा ले गया और अपनी आराधिका महामाया के सम्मुख बलि देना चाहता था |
- परन्तु हनुमान जी अहिरावण व महिरावण और उनकी सेना को मार कर प्रभु राम-लक्षमण जी को छुडाया और राम जी ने मकरध्वज जो द्वारपाल थे उन्हें पाताल लोक का शासक-राजा बनाकर वापस आगये |
- हो सकता है कि भूमिगत शहर होंडुरास में खोजी गई मूर्तियाँ मकरध्वज से ही जुडी हों |

चित्र-4: गदा लिए मूर्ति

3.0 अध्ययन में अपनाई गई पद्धति

❑इस अध्ययन के लिए अपनाई गई पद्धति प्रकृति में अंतःविषय है, जिसमें पाठ्य विश्लेषण, ऐतिहासिक शोध और वैज्ञानिक जांच शामिल है। एक व्यापक दृष्टिकोण के माध्यम से, हमारा लक्ष्य रामायण में दर्शाए गए पाताल लोक के अस्तित्व और होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की हालिया खोज से इसके संभावित संबंध पर प्रकाश डालना है।

❑किवदंतियां हैं कि पूर्वोत्तर होंडुरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नाम के इलाके में हजारों साल पहले एक गुप्त शहर सियूदाद ब्लांका था। कहा जाता है कि हजारों साल पहले इस प्राचीन शहर में एक फलती-फूलती सभ्यता सांस लेती थी, जो अचानक ही वक्त की गहराइयों में गुम हो गई। अब तक कि खुदाई में इस शहर के ऐसे कई अवशेष मिले हैं जो इशारा करते हैं कि सियूदाद के निवासी वानर देवता की पूजा करते थे। यहां सियूदाद के वानर देवता की घुटनों के बल बैठे मूर्ति को देखते ही राम भक्त हनुमान की याद आ जाती है। घुटनों पर बैठे वजरंग बली की मूर्ति वाले मंदिर आपको हिंदुस्तान में जगह-जगह मिल जाएंगे।

.....3.0 अपनाई गई कार्यप्रणाली

❑होंडूरास के गुप्त प्राचीन शहर के बारे में सबसे पहले ध्यान दिलाने वाले पहली जानकारी अमेरिकी खोजी थियोडोर मोर्डे ने दावा 1940 में किया था । उन्होंने बताया कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद एक अमेरिकी पायलट ने होंडुरास के जंगलों में कुछ अवशेष देखे थे और एक अमेरिकी मैगजीन में उसने लिखा कि उस प्राचीन शहर में वानर देवता की पूजा होती थी, लेकिन उसने शहर की जगह का खुलासा नहीं किया। बाद में रहस्यमय हालात में थियोडोर की मौत हो जाने से प्राचीन शहर की खोज अधूरी रह गई।

❑ह्यूस्टन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने लाइडार (LIDAR) के नाम से जानी जाने वाली तकनीक से, जो जमीन के नीचे की 3-D मैपिंग द्वारा प्राचीन शहर को खोज निकाला |

❑प्रेसिडेंट ओबामा 26 जनवरी 2015 को मुख्यअतिथि के रूप में गणतंत्रदिवस पर भारत आये और रात्रिभोज मे लालकृष्ण अडवानी जी की पुत्री ने लाकेट देखने की इच्छा की और उसपर हनुमान जी की मूर्ती होने की सूचना दी

.....3.0 अपनाई गई कार्य-पद्धति

❑ सम्भवतः ओबामा के पूर्वज इसी जगह से सम्बंधित रहे हों और समयांतर यह लाकेट इनके पास पूजा व विश्वास में परिणित हो गया ।

❑**पाठ्य विश्लेषण**

इसमें पाताललोक और उसके निवासियों की प्रकृति पर प्रकाश डालते हैं। यह प्रक्रिया हमें उस सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ को समझने में सक्षम बनाती है |

❑**ऐतिहासिक अनुसंधान**

इसमें पुरातात्विक साक्ष्यों और ऐतिहासिक वृत्तांतों की जांच करके, हम स्यूदाद ब्लैंका को रामायण में वर्णित पाताललोक से जोड़ने वाले दावों की विश्वसनीयता का आकलन करना चाहते हैं।

.....3.0 अपनाई गई कार्य-पद्धति

❑ **वैज्ञानिक जांच**

हमारा लक्ष्य पाताल लोक से जुड़े भौगोलिक क्षेत्रों का आभासी सर्वेक्षण करना है, जिसमें होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की साइट भी शामिल है। LiDAR डेटा के विश्लेषण के माध्यम से, हम स्थानिक पैटर्न, संरचनात्मक अवशेषों और सांस्कृतिक कलाकृतियों की पहचान करना चाहते हैं

❑**एकीकरण और संश्लेषण**

इसमें पाताललोक और उसके निवासियों की प्रकृति पर प्रकाश डालते हैं। यह प्रक्रिया हमें उस सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ को समझने में सक्षम बनाती है | हम एक सुसंगत कथा का निर्माण करने के लिए विभिन्न स्रोतों से साक्ष्य की तुलना और विरोधाभास करते हैं जो पाताल लोक के अस्तित्व और महत्व को स्पष्ट करता है।

चित्र-5: होंडुरास का मस्कीटीया जंगल

4.0 परिणाम और चर्चा

पाताल लोक के अस्तित्व और होंडुरास में स्यूदाद ब्लैंका की खोज से इसके संभावित संबंध की हमारी अंतःविषय जांच से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकले हैं:

- पाताल लोक के पौराणिक परिदृश्य को समझने से, हमने दैवीय हस्तक्षेप और ब्रह्मांडीय संघर्ष की व्यापक कथा के भीतर इसकी भूमिका की गहरी समझ प्राप्त की है।
- हमने स्यूदाद ब्लैंका को रामायण में वर्णित अंडरवर्ल्ड से जोड़ने वाले दावों की विश्वसनीयता का आकलन किया है, जिससे मिथक और वास्तविकता के बीच परस्पर क्रिया की हमारी समझ समृद्ध हुई है।
- आधुनिक LiDAR तकनीक का उपयोग करते हुए, हमने पाताल लोक से जुड़े भौगोलिक क्षेत्रों का आभासी सर्वेक्षण किया, जिससे पौराणिक ग्रंथों की व्याख्याओं की पुष्टि हो सकी |
- विभिन्न स्रोतों से साक्ष्यों को त्रिकोणीय बनाकर, हमने पाताल लोक के रहस्यों को उजागर करने और प्राचीन परंपरा और समकालीन प्रवचन दोनों के लिए इसकी प्रासंगिकता को सुविधाजनक बनाया है।

LUCKNOW

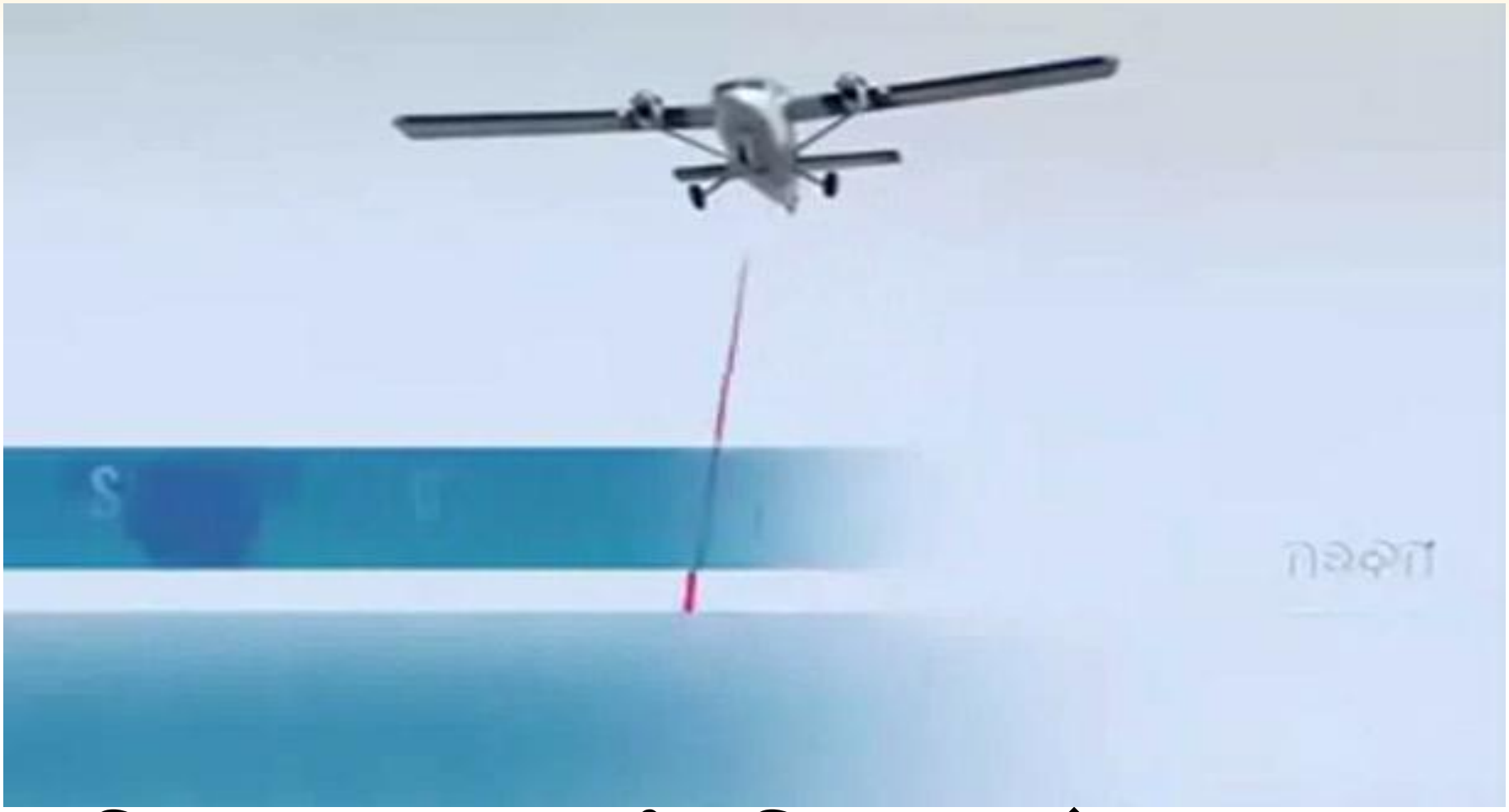

चित्र-6: लाइडर तकनीक सिवदाद ब्लांका का पता लगना

5.0 निष्कर्ष

पाताल लोक की जटिलताओं और मानव संस्कृति और चेतना में इसके महत्व को पूरी तरह से स्पष्ट करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है । फिर भी, हमारा अन्वेषण –

➢**मिथक और वास्तविकता** के संलयन के लिए गहरी सराहना को प्रोत्साहित करता है, वैश्विक स्तर पर भारत के प्राचीन ज्ञान की स्थायी विरासत को उजागर करता है और राम चरित मानस में वर्णित घटनाओं को सच पाये जाने की पुष्टि करता है।

➢**यह भी स्पष्ट करने का प्रयास** है कि मध्य अमेरिका के होंडुरास प्रदेश का नाम कभी किसी राजा-महाराजो ने पुनर्जीवित कर मकरध्वज शासक के अनुचरण हेतु इसे **हिन्दूराष्ट्र घोषित किया हो और अपभ्रंष होकर अब होंडुरास कहा जा रहा हो |**

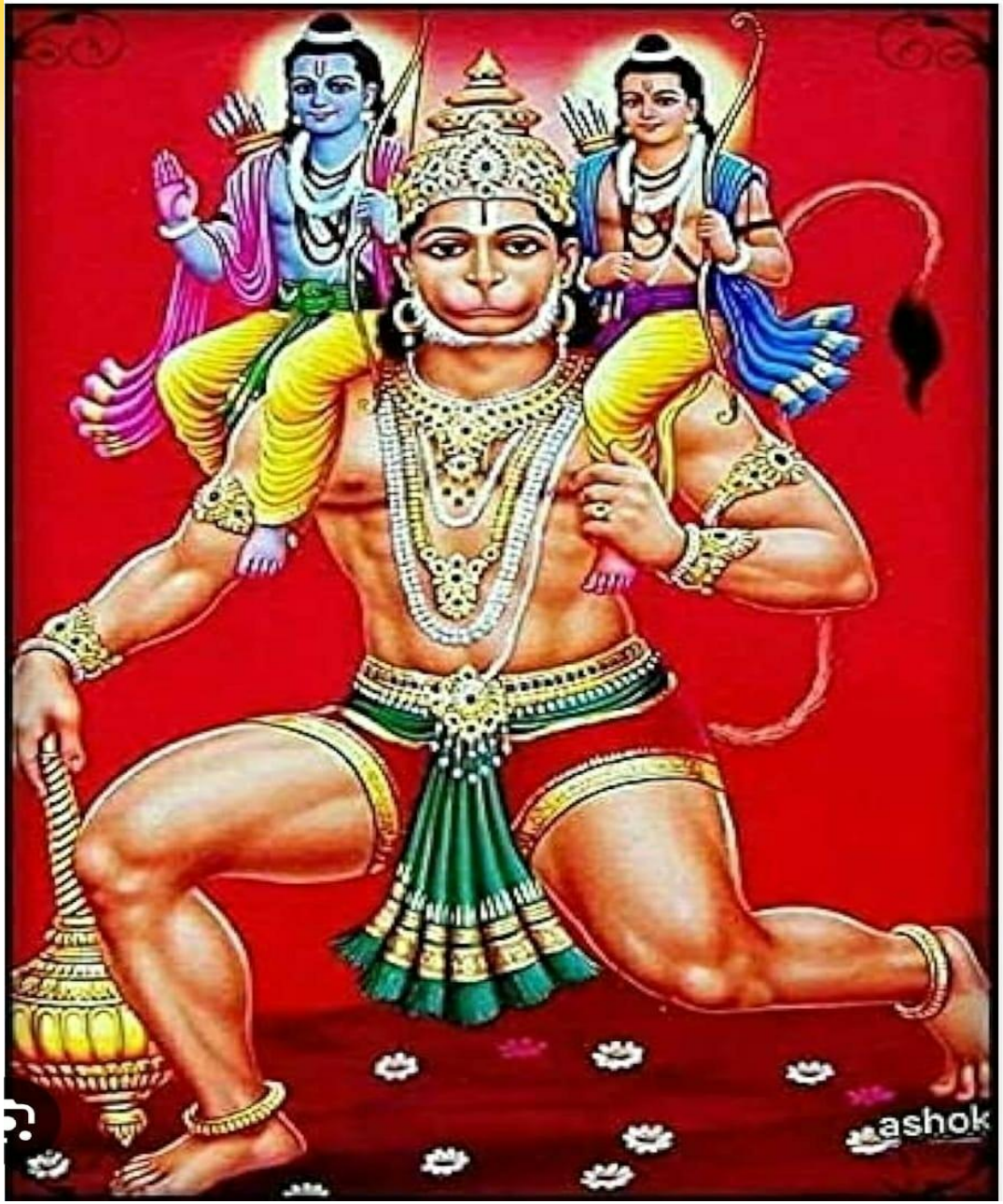

चित्र-7: हनुमान जी द्वारा प्रभु राम-लक्ष्मण को वापस लाना

सन्दर्भ:

1. वाल्मिकी, और सुंदररामास्वामी, (1985), रामायण: सुंदरकांडम। सरस्वतीमहल पुस्तकालय।
2. ह्यूस्टन विश्वविद्यालय, (2015), लिडार सर्वेक्षण प्राचीन माया सभ्यता को उजागर करता है। ह्यूस्टन विश्वविद्यालय समाचार।
3. सिंह, भरत राज, (2016), हिंदुस्तान दैनिक न्यूज़ पेपर, प्रथम पृष्ठ लेख का शीर्षक-अहिरावण का पाताल लोक अमेरिकी महाद्वीप में मिला, सभी संसकरण- दिनांक 16 अप्रैल 2016 ।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

शुक्रवार, 25 मार्च 2016, लखनऊ, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर संस्करण www.livehindustan.com वर्ष 21, अंक 71, 22 पेज, मूल्य ₹ 4.00, चैत्र कृष्ण

अहिरावण का पाताललोक अमेरिकी महाद्वीप में मिला!

हिन्दुस्तान एक्सक्लूसिव

लखनऊ | रामेन्द्र प्रताप सिंह

वैज्ञानिकों ने उस स्थान को खोज निकालने का दावा किया है जिसका वर्णन रामायण में पाताललोक के रूप में है। हनुमानजी ने यहीं से भगवान राम व लक्ष्मण को पातालपुरी के राजा अहिरावण के चंगुल से मुक्त कराया था। यह स्थान अमेरिकी महाद्वीप में होंडुरास के जंगलों के नीचे दफन है।

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने लाइडर विधि से इस स्थान का 3-डी नक्शा तैयार किया है, जिसमें जमीन की गहराइयों में गदा जैसा हथियार लिए वानर देवता की मूर्ति की पुष्टि हुई है।

1940 में हुई थी जानकारी : अमेरिकी वैज्ञानिकों की इस खोज की पुष्टि स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक व वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी प्रो. भरत राज सिंह ने की है। उन्होंने बताया कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद एक अमेरिकी पायलट ने होंडुरास के जंगलों में कुछ अवशेष देखे थे। उसकी पहली जानकारी अमेरिकी खोजकर्ता थियोडोर मोर्ड ने 1940 में दी थी। एक अमेरिकी पत्रिका में उसने उस प्राचीन शहर में वानर देवता की पूजा होने की बात भी लिखी थी, बाद में रहस्यमय तरीके से थियोडोर की मौत हो गई रहस्य बरकरार रहा।

प्रो. भरत राज सिंह

- अमेरिका के जंगलों में दफन है प्राचीन शहर,वानरों की मूर्तियां मिलीं
- वैज्ञानिकों ने लाइडर तकनीक से तैयार किया 3-डी नक्शा

1940 में पहली बार अमेरिकी खोजकर्ता थियोडोर मोर्ड ने देखे थे अवशेष

इतिहासकार भी मानते हैं प्राचीन शहर में होती थी वानर पूजा पेज 13

लाइडर तकनीक से खोजा

करीब 70 साल बाद अमेरिका की ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी व नेशनल सेंटर फार एयरबोर्न लेजर मैपिंग के वैज्ञानिकों ने होंडुरास के घने जंगलों में मस्कीटिया नामक स्थान पर लाइडर तकनीक से जमीन के नीचे 3-डी मैपिंग की, जिसमें प्राचीन शहर का पता चला। इसमें जंगल के ऊपर से विमान से अरबों लेजर तरंगे जमीन पर फेंकी गईं। इससे तैयार 3-डी नक्शे में जमीन के नीचे गहराइयों में मानव निर्मित कई वस्तुएं दिखाई दीं। इसमें हाथ में गदा जैसा हथियार लिए वानर मूर्ति भी दिखी है। यहां खुदाई पर रोक के कारण वास्तविक स्थिति का पता लग पाना मुश्किल है।

होंडुरास के जंगलों में दिखे विलुप्त विरासत के सबूत

अमेरिका में खोजकर्ताओं को 3-डी मैपिंग के जरिए प्राचीन शहर और जमीन के नीचे गहराइयों में मानव निर्मित कई मूर्तियां दिखी

इतिहासकार भी मानते हैं प्राचीन शहर में वानर पूजा

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

वैज्ञानिकों ने उस स्थान को खोज निकालने का दावा किया है जिसका वर्णन रामायण में पाताललोक के रूप में है।

अमेरिकी इतिहासकार भी मानते हैं कि पूर्वोत्तर होंडुरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नाम के इलाके में हजारों साल पहले एक गुप्त शहर सियूदाद ब्लांका का वजूद था।

वहां के लोग एक विशालकाय वानर मूर्ति की पूजा करते थे। प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि बंगाली रामायण में पाताल लोक की दूरी 1000 योजन बताई गई है, जो लगभग 12,800 किलोमीटर है। यह दूरी सुरंग के माध्यम से भारत व श्रीलंका की दूरी के बराबर है। रामायण में वर्णन है कि अहिरावण के चंगुल से भगवान राम व लक्ष्मण को छुड़ाने के लिए बजरंगबली को पातालपुरी के रक्षक मकरध्वज को परास्त करना पड़ा था। मकरध्वज बजरंगबली के ही पुत्र थे, लिहाजा उनका स्वरूप बजरंगबली जैसा ही था।

अहिरावण के वध के बाद भगवान राम ने मकरध्वज को ही पातालपुरी का राजा बना दिया था। जमीन के नीचे वानर मूर्ति मिलने के बाद अनुमान लगाया जा सकता है कि बाद में वहां के लोग मकरध्वज की ही मूर्ति की पूजा करने लगे होंगे।

SMS LUCKNOW

चित्र-8: पाताल लोक लेख –हिंदुस्तान 25 मार्च 2016

सरिता प्रवाह ब्यूरो
saritapravah14@gmail.com
लखनऊ, बुधवार 20 जुलाई, 2016

www.saritapravah.com

रामायण का पाताल लोक : वैज्ञानिकों ने सुलझाई धार्मिक पहेली

अमेरिका में मिला बजरंगबली का पाताल लोक

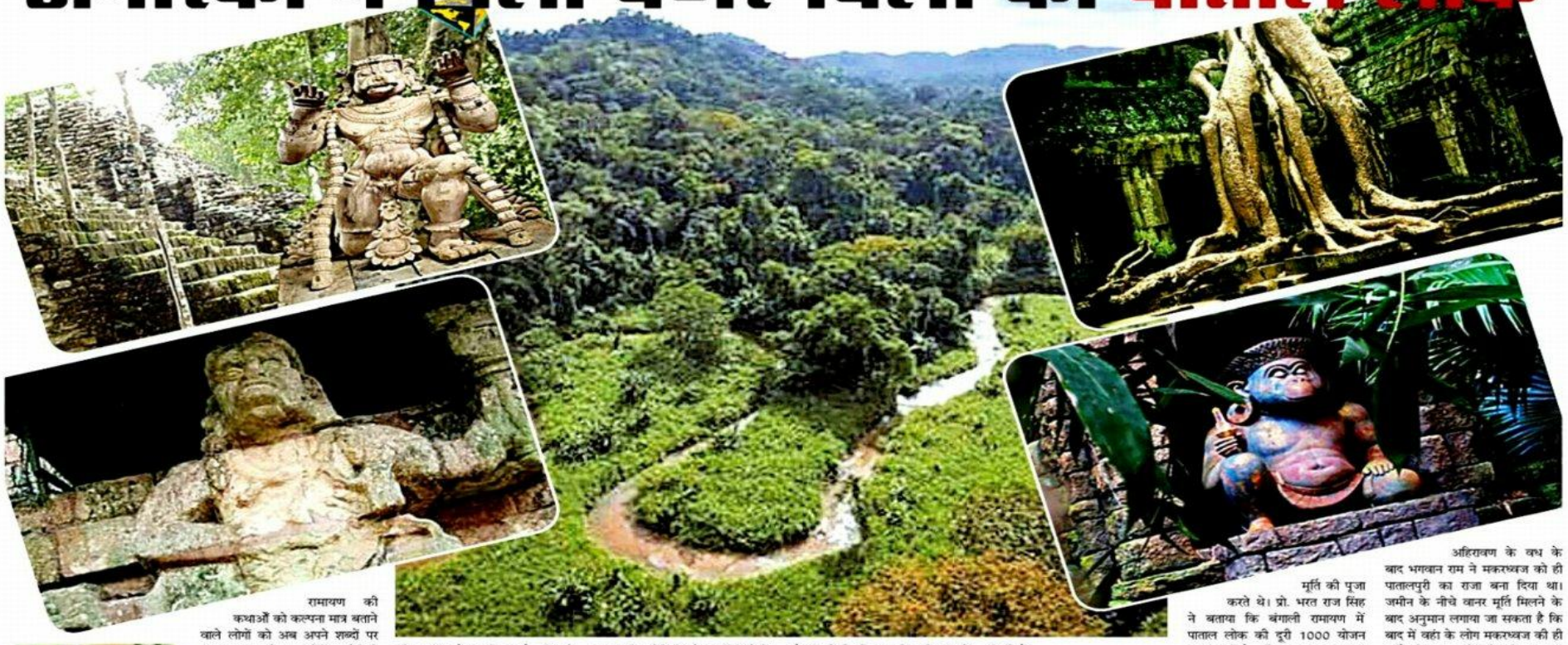

प्रो. भरत राज सिंह

रामायण की कथाओं को कल्पना मात्र बताने वाले लोगों को अब अपने शब्दों पर लगाम लगाना होगा। क्योंकि अमेरिकी वैज्ञानिकों ने उस स्थान को खोज निकाला का है जिसका उल्लेख रामायण में पाताल लोक के रूप में है। कहा जाता है कि हनुमानजी ने यहीं से भगवान राम व लक्ष्मण को पातालपुरी के राजा अहिरावण के चंगुल से मुक्त कराया था।

ये स्थान मध्य अमेरिकी महाद्वीप में पूर्वोत्तर होंडुरास के जंगलों के नीचे दफन है। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने लाइडर तकनीकी से इस स्थान का 3-डी नक्शा तैयार किया है, जिसमें जमीन की गहराइयों में गदा जैसा हथियार लिये वानर देवता की मूर्ति होने की पुष्टि हुई है।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक और वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी प्रो. भरत राज सिंह ने बताया है कि पहले विश्व युद्ध के बाद एक अमेरिकी पायलट ने होंडुरास के जंगलों में कुछ अवशेष देखे थे। अमेरिकी पत्रिका 'डेली टाइम्स गजट' के मुताबिक इस शहर की पहली जानकारी अमेरिकी खोजकर्ता थियोडोर मोर्ड ने 1940 में दी थी। एक अमेरिकी पत्रिका में उसने उस प्राचीन शहर में वानर देवता की पूजा होने की बात भी लिखी थी, लेकिन उसने जगह का खुलासा नहीं किया था। बाद में रहस्यमय तरीके से थियोडोर की मौत हो गई और जगह का रहस्य बरकरार रहा।

करीब 70 साल बाद अमेरिका की ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी व नेशनल सेंटर फार एयरबोर्न लेजर मैपिंग के वैज्ञानिकों ने होंडुरास के घने जंगलों में मस्कीटिया नामक स्थान पर लाइडर नामक तकनीक से जमीन के नीचे 3-डी मैपिंग की, जिसमें प्राचीन शहर का पता चला। इसमें जंगल के ऊपर से विमान से अरबों लेजर तरंगें जमीन पर फेंकी गईं। इससे 3-डी डिजिटल नक्शा तैयार हो गया। 3-डी नक्शे में जमीन के नीचे गहराइयों में मानव निर्मित कई वस्तुएं दिखाई दीं। इसमें हाथ में गदा जैसा हथियार लिए घुटनों के बल बैठी हुई है वानर मूर्ति भी दिखी है।

होंडुरास के जंगल की खुदाई पर प्रतिबंध के कारण इस स्थान की वास्तविक स्थिति का पता लग पाना मुश्किल है। होंडुरास सरकार ने इस की पुख्ता जानकारी के लिए आदेश जारी किये हैं। अमेरिकी इतिहासकार भी मानते हैं कि पूर्वोत्तर होंडुरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नाम के इलाके में हजारों साल पहले एक गुप्त शहर सियूदाद ब्लांका का वजूद था। वहां के लोग एक विशालकाय वानर मूर्ति की पूजा करते थे। प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि बंगाली रामायण में पाताल लोक की दूरी 1000 योजन बताई गई है, जो लगभग 12,800 किलोमीटर है। यह दूरी भारत अथवा श्रीलंका से खोदी जाने वाली सुरंग जो पृथ्वी के व्यास 12,756 किलोमीटर के बराबर आती है।

रामायण में वर्णन है कि अहिरावण के चंगुल से भगवान राम व लक्ष्मण को छुड़ाने के लिए बजरंगबली को पातालपुरी के रक्षक मकरध्वज को परास्त करना पड़ा था। मकरध्वज बजरंगबली के ही पुत्र थे, लिहाजा उनका स्वरूप बजरंगबली जैसा ही था।

अहिरावण के वध के बाद भगवान राम ने मकरध्वज को ही पातालपुरी का राजा बना दिया था। जमीन के नीचे वानर मूर्ति मिलने के बाद अनुमान लगाया जा सकता है कि बाद में वहां के लोग मकरध्वज की ही मूर्ति की पूजा करने लगे, जो भारतवर्ष में हनुमान जी के औरस पुत्र थे।

प्रो. भरत राज सिंह का यह भी मानना है कि हम सभी भारतीयों को गर्व करना चाहिए कि हमारे पौराणिक ग्रन्थ, जैसे रामायण, महाभारत, वेद व पुराण आदि प्राचीन इतिहास की एक धरोहर है, न कि एक काल्पनिक पुस्तकीय लेख। जो भारत वर्ष की प्राचीन सभ्यता और वैज्ञानिक प्रगति को विश्वपटल पर एक पथ प्रदर्शक होने का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

SMS LUCKNOW

चित्र-9: पाताल लोक लेख –सरिता प्रवाह 20 जुलाई 2016

समस्त श्रोताओं को धन्यवाद !!!

आप स्वजनों के सकारात्मक व विकासात्मक विचारों का सदैव स्वागत है

Dr. Bharat Raj Singh,

Email: brsinghlko@yahoo.com

Mob: 9415025825

Web: www.brsinghindia.com

SMS LUCKNOW